E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श June 2021 Special Issue 02 SJIF Impact- 5.54

हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श

विशेषांक प्रकाशक

प्र.प्राचार्य डॉ. एस. आर. मगरे

अ शि मंडल द्वारा संचालित कला वाणिज्य ट्रस्ट का,
चं.ह.चौधरी कला,शं गो पटेल वाणिज्य एवं बा भ जा पटेल विज्ञान महाविद्यालय,तलोदा

अतिथि संपादक

प्रो. संजयकुमार शर्मा

हिंदी विभागाध्यक्ष ,
अ शि मंडल द्वारा संचालित कला वाणिज्य ट्रस्ट का,
चं.ह.चौधरी कला,शं गो पटेल वाणिज्य एवं बा भ जा पटेल विज्ञान महाविद्यालय,तलोदा

सह संपादक

डॉ. रमा शर्मा

संरक्षक
हिंदी कल्चर सेंटर टोक्यो, जापान

सह संपादक

डॉ महेश गांगुर्डे

हिन्दी विभागाध्यक्ष,
कला, वाणिज्य महाविद्यालय,
अक्कलकुवा

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श June 2021 Special Issue 02 SJIF Impact- 5.54

अ.क्र	शोध आलेख का शीर्षक एवं नाम	पृ.क्र.
26	महाश्वेता देवी के 'जंगल के दावेदार' उपन्यास में चित्रित आदिवासी जीवन- **प्रा. डॉ. राजेंद्र काशिनाथ बाविस्कर**	**99**
27	'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में आदिवासी नारी का जीवन- **प्रा. डॉ. वनिता त्र्यंबक पवार – निकम**	**102**
28	हिंदी नाटय-साहित्य में चित्रित आदिवासी जीवन (ह्षीकेश सुलभ के 'धरती आबा' नाटक के विशेष संदर्भ में) **प्रा. डॉ. अश्फाक इब्राहिम सिकलगर**	**105**
29	हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श-**प्रा. डॉ. अभयकुमार रमेश खैरनार**	**108**
30	महाश्वेता देवी के कथासाहित्य में आदिवासी विमर्श- **प्रा.डॉ.अनिता भिमराव काकडे (चव्हाण)**	**111**
31	लक्ष्मीनारायण पयोधि के साहित्य में चित्रित आदिवासी जीवन- **ज्योति कुशवाहा**	**114**
32	हिंदी कहानी साहित्य में चित्रित आदिवासी जीवन- **किर्ती काशिनाथ होसुरकर**	**117**
33	हिंदी उपन्यासों में आदिवासी जनजीवन- **प्रा.डॉ. रविंद्र आर. खरे**	**120**
34	काला पादरी उपन्यास में आदिवासी जीवन- **डॉ. कृष्णा प्रल्हाद पाटील**	**124**
35	जोराम यालाम की कहानियों में आदिवासी नारी जीवन ('साक्षी हैं पीपल' के विशेष संदर्भ में)- **डॉ. चंद्रभान सुरवाड़े**	**126**
36	आदिवासी उपन्यासों में आदिवासी जीवन - **डॉ. जगदीश चव्हाण**	**130**
37	हिंदी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जीवन और संस्कृति- **प्रा.विजय लोहार**	**133**
38	हिंदी और तेलुगु की रचनाओं में आदिवासी अस्मिता के सवाल-**राठौड़ सुरेश**	**137**
39	हिंदी आदिवासी उपन्यासों में नारी विमर्श- **प्रा. डॉ. कल्पना पाटील**	**140**
40	हिंदी साहित्य में आदिवासियों का योगदान- **डॉ .राहुल संदानशिव**	**145**
41	निर्मला पुतुल की कविताओं में आदिवासी स्त्री का चित्रण - **डॉ. निंबा लोटन वाल्हे**	**149**
42	अगस्तीन महेश कुजूर के ' पूंप पून (पुष्पमाला)' काव्य संग्रह में आदिवासी चेतना- **डॉ. दत्तात्रय दशरथ पटेल**	**152**
43	' पार' उपन्यास में आदिवासी नारी विमर्श- **प्रा.डॉ.अशोक डी तायडे**	**156**
44	हिंदी उपन्यास साहित्य में चित्रित आदिवासी जीवन- **दिनानाथ मुरलीधर पाटील / डॉ. संजयकुमार शर्मा**	**158**
45	'धरती आबा' नाटक में आदिवासी जीवन-दर्शन- **प्रा. शिवाजी रामजी राठोड**	**161**
46	साहित्य में आदिवासी नारी जीवन- **निमता सेतिया /डॉ. विजय कुमार पटीर**	**164**
47	इदन्नमम' में आदिवासी जीवन का चित्रण - **प्रा.हिरा पोटकुले**	**166**
48	हिन्दी उपन्यास साहित्य में चित्रित आदिवासी जीवन ("ग्लोबल गाँव के देवता" उपन्यास के संदर्भ में)- **डॉ.वसीम मक्रानी**	**170**
49	रणेन्द्र के उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जीवन - **मनोज कुमार जायसवाल**	**173**
50	राकेशकुमार सिंह के उपन्यासों में आदिवासी विमर्श- **आदिनाथ शेषराव भाकड**	**176**
51	संजीव के कहानियों में चित्रित पूँजीवादी व्यवस्था से प्रताड़ित आदिवासी जीवन- **प्रा. नटवर संपत तडवी**	**178**
52	हिंदी काव्य में चित्रित आदिवासी जीवन- **प्रा. डॉ. नयना प्रशांत पाटील**	**180**

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श June 2021 Special Issue 02 SJIF Impact- 5.54

47

`इदन्नमम' में आदिवासी जीवन का चित्रण

प्रा.हिरा पोटकुले
कला व विज्ञान महाविद्यालय शिवाजीनगर गढी
potkuleh@gmail.com

1990 के दशक में जिन रचनाकारों ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई और जिन्हें पाठकों ने भी अपनाया, मैत्रेई पुष्पा का नाम उनमें प्रमुख है। मैत्रेयी जी ने हिंदी कथा धारा को वापस गांव की ओर मोड़ा और अपने उपन्यासों के माध्यम से कई अविस्मरणीय चरित्र दिए। इन चरित्रों ने शहरी मध्यवर्ग को उस देश की याद दिलाई जो धीरे-धीरे शब्द के दुनिया से गायब हो चला था। मैत्रेयी पुष्पा जी ने बेतला बहती रही, इदन्नमम, चाक, झुला नट, विजन, आगन पाखी,अल्मा कबूतरी ,त्रिया हठ जैसे महत्वपूर्ण उपन्यास लिखे। मैत्रेई पुष्पा के 'इदन्नमम' की कथा उनकी मातृभूमि 'बुंदेलखंड' के ओरछा पहाड़ी में स्थित बेतवा और नर्मदा नदी किनारे स्थित श्यामली, सोनपुरा, परिछा, गोपालपुरा और आस-पास के गांव-मनगांव की कथा है। इस कथा के माध्यम से लेखिका ने बुंदेलखंड के ग्रामीण परिवेश, पहाड़ी ग्राम अंचल से जुड़ा यह उपन्यास वहाँ की सामाजिक व्यवस्था, ग्रामीण पहाड़ी- जन-जातियों का भोलापन, शहरों में हुए दंगों से प्रभावित ग्रामीण जीवन की दशा का यथार्थ चित्रण इस उपन्यास में किया है।

'इदन्नमम'इस उपन्यास में लेखिका ने ग्रामीण पहाड़ियों में बसे अँचलों की यातनाओं को, उनके शोषण, संप्रदायिकता की त्रासदी, नारी शोषण, वोटों की राजनीति और विकास के नाम पर गांव की लूट इसके खिलाफ आंदोलन की भावना आदि को वाणी देने के लिए 'मंदा' जैसा एक सशक्त नारी चरित्र का निर्माण किया है, जो यह भोले- भाले आदिवासियों को शोषण से मुक्त करना चाहती है। लेखिका ने इदन्नमम में बुंदेलखंड अंचल की झांकियां प्रस्तुत करते हुए औद्योगिककरण के परिणाम स्वरूप, ग्राम अंचल के टूटते बिखरते जीवन को आज के परिदृश्य में यथार्थता के साथ प्रस्तुत करते हुए उत्पन्न समस्याओं का चित्रण किया है।

हर समाज की शहरी हो या आदिवासी उनकी अपनी एक पहचान होती है, अपनी संस्कृति होती है उसी के अनुसार उनकी वेशभूषा, जीवन जीने के तरीके होते हैं। विंध्याचल की पहाड़ियों में बसे गांवों के लोगों में अलग- अलग कला-गुण है। शादी- ब्याह, पर्व-त्यौहार के समय यह लोग सबको अपनी कला दिखाते हैं। इनकी एक अलग पहचान है, संस्कृति है उन्हीं के अनुसार यह लोग अपने आप को सजाते हैं और लोगों का दिल बहलाते हैं।" विंध्याचल में बसी जनजातियों के लोग सुदुर गांव से आए हैं नाचने के लिए। सिर पर लाल- हरी पन्नी का मुकुट, सबसे ऊपर मोरपंख, गले में हरे- नीले मनको की कई मालाये, कमर में कौडियों की करधनी। सफेद धोती के बेटे में आम के पत्ते खोंस रखे हैं। बैलों की सुरीली घंटियों का पट्टा करधनी के नीचे बंधा है। पांवों में घुंघरू।सांधले चिकनचे,नंगे दमदार बदन। नाच रहे हैं। थिरक रहे हैं।' १ विंध्याचल की पहाड़ियों में बसे गांवों में कैसे-कैसे कलाकार है।वे अपनी संस्कृति और कला को जिंदा रखते हैं।

भारत एक कृषि प्रधान देश होने के कारण यह प्रकृति के सम्पदा का मालिक है। जहां पहाड,वन, नदियां, महुआ,बेर, चिरौंदी, हल्दी, अदरक जैसी तमाम संपदा है।फिर भी इसका उपयोग इसके असली हकदार नहीं कर पाते । जो इन चीजों की रखवाली करता है, प्रकृति को बचाने का प्रयास करता है ऐसे आदिवासियों से यह संपदा छीन ली जाती है। संपत्ति का अधिकार ऐसे लोगों के हाथ में जो आंधे,बहरे और सुन्न आदमी है, संवेदनाशून्य इन्सान है, वही राजनेता है, ठेकेदार हैं। "पहाड़, वन, नदिया ,महुआ, बेर, चिरौंदी, हल्दी, अदरक --अरे,तमाम सम्पदा है। पर दुरभाग्य है हमारा कि हम नहीं बरत पाते। दलालों के सुपुर्द हो जाती है हमारी सम्पत्ति। पहाड़ों की नीलामी, वरुण की बोली तहस-नहस कर देती है मनोरम वातावरण को। पहाड़ टूट रहे हैं, वन कट रहे हैं। सुनसान सपाट मैदानों में फडफडाते डोल रहे हैं पंछी- परेवा।"२

स्वतंत्रता के बाद देश में समाजवाद का नारा लगाया गया और समाज में आर्थिक समानता लाने के लिए सरकार ने अनेक विकास योजनाओं का प्रलोभन जनता के सामने रखा। भारत सरकार ने अनेक योजनाओं का निर्माण करके समाज का विकास करने का उद्देश्य रखा था किंतु स्वार्थी राजनेताओं ने देशवासियों के साथ और खास करके आदिवासियों के साथ खिलवाड़ किया। विकास योजना का पैसा नेता और अफसरों के बीच है बॅट रहा है और आदिवासियों का इन्हीं के द्वारा शोषण हो रहा है। 'इदन्नमम' की अवधा के बातों से आदिवासियों की बुरी हालत का पता चलता है। "जिज्जी, हम भील की जात, शिकार के धनी माने जाते थे। ब्याह -बारात

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श June 2021 Special Issue 02 SJIF Impact- 5.54

में बड़ी रौनक लगती थी हम औरों के यहां। सिरकारने जंगलन से काढ के कुत्ता की दर के कर दये। अहदूरी- बहादुरी सब धर दी एक कनायें। अब तो महनत- मसक्कत के बाद भी भूखे के भूखे।" ३

सोनपुरा गांव में विकास योजना के कारण पहाड़ पर क्रेशर लगाए जाते हैं जिसके कारण यहां के आदिवासी लोग विस्थापित हो चुके हैं परंतु अपना गांव छोड़कर जाना नहीं चाहते हैं। पहाड़ों पर लगे क्रेशर के कारण चारों ओर धूल ही धूल है, परिणाम स्वरूप यहां के लोग अनेक प्रकार की बीमारियों से ग्रस्त है किंतु इनके इलाज के लिए अस्पताल नहीं है। वहां के नेता आदिवासियों की समस्याओं पर ध्यान नहीं देते। जब चुनाव के समय राजासाहब वोट मांगने के लिए आते हैं तो मंदा अपने गांव की स्थिति का वर्णन करती हैं- "यह हमारा अस्पताल... कोई डॉक्टर नहीं यहां, दवाई नहीं, हारी -बीमारी के निवारण की कोई सुविधा नहीं। इस अस्पताल से तबाह हो ही हुए हैं हम और इस अस्पताल की झूठी आशा -उम्मीद ने अब तक जिताया है आपको।

"क्रेशरों ने पहाड़ काटकर उसके पत्थर ही नहीं पीसे यहां के लोगों का जीवन पीस डाला। राइ- रेत कर दी सांसे।" ४ लोग बीमारी के कारण तड़पते हैं लेकिन उनके पास मरने के सिवा और दूसरा पर्याय नहीं है। विकास योजनाओं के नाम पर विंध्याचल के आदिवासियों को उजाड़ा जाता है। नेता, ठेकेदार, सरकारी अफसर अपने स्वार्थी वृत्ती और विकास के नाम पर पहाड़ी गांव की विकृति का चित्रण लेखिका ने इदन्नमम' में किया है। चंद शहरों के विकास के, उनकी बिजली योजनाओं के लिए जंगलों को तोड़कर वहां प्रोजेक्ट बनाए जा रहे हैं और जंगलों में पहाड़ों में बसे सैकड़ों गांवों को उजाड़ा जा रहा है। जिन पहाड़ी गांव में आदिवासी रहते हैं वहां पर आज भी पक्की सड़कों, यातायात के साधनों, अस्पतालों के अभाव के कारण गांववाले दुर्गति में जीने के लिए अभिशप्त है।

सोनपुरा गांव प्रकृति के बीच पहाड़ों में बसा है जहां सरकारी विकास योजना के नाम पर गांव के पहाड़ों पर स्टोन क्रेशर लगाए गए हैं। इस योजना के कारण सोनपुरा का रंग रुप ही बदल गया है। इसी कारण यहां के किसान मजदूर बन गए हैं ।इस योजना ने गांव के लोगों की रोजी-रोटी छीन ली है,गांव विस्थापित यातनाओं को भुगत रहा है। किसान से मजदूर बने गांव वालों का यथार्थ चित्रण लेखिका ने इस उपन्यास में किया है ।अखबारों में रोज छपवाया जाता है कि इस योजना के कारण सैकड़ों गांवों को बिजली मिलेगी,सिंचाई के साधन उपलब्ध होंगे और मशीनों द्वारा खेती हो सकेगी।यह बुंदेलखंड के विकास की अपूर्व घड़ी है लेकिन सच तो यह है यह विकास पर्व आदिवासियों के लिए विनाश का महापर्व है। "बेतवा के किनारे बसे पारीछा गांव में सरिया,मुराम, गिट्टी और पत्थर ट्रक भर -भर कर आने लगे। खेतों में होकर सड़के बनाई जाने लगी और सड़कों पर इंजनों का कर्णभेदी कोलाहल घरघराने लगा। फसलें ही नहीं जैसे किसानों के कलेजे रौंदे जाने लगे हों। छटपटाने लगा आसपास के गांव का किसान वर्ग।" ५ अतः औद्योगिकरण के नाम पर टूटे -बिखरे गाव, विस्थापित हुए आदिवासियों की जिंदगी को किस प्रकार समस्याओं से घिरा है यह आज भी हम देखते हैं।

औद्योगिकरण के कारण गांव में बेकारी, शोषण, अन्याय, अत्याचार के साथ-साथ शराब के ठेके ,वेश्यालय जैसी समस्याएं निर्माण हुई है। लेखिका ने इसका यथार्थ चित्रण इस उपन्यास में किया है। यह विस्थापित आदिवासी लोग अपनी दो वक्त की रोजी-रोटी भी नहीं जुटा पाते इसी कारण वह अपने छोटे-छोटे बच्चों को यहां के शराब के ठेके पर काम पर लगवा देते हैं। जिसके कारण बचपन में ही इन बच्चों को शराब की आदत लग जाती है। इन ग्रामीण आदिवासी लोगों के भोलेपन और विवशता का फायदा उठाकर ठेकेदार अभीलाख सिंह कावड़ियों के दाम में उनके खेत अपने नाम करवा लेता है। उन्हीं खेतों में स्टोन क्रेशर लगाता है और पत्थर पिसवाकर पैसे कमाने के लिए किसान बने मजदूरों को रात -दिन काम करवाता है। वह आदिवासी राउत,गोंड जातियों के भोले -भाले लोगों से जी तोड़ मेहनत करवाता है पोस्टामेहनत की कीमत अभिलाख सिंह शराब की एक बोतल देता है। शराब की लत लगने के कारण यह लोग शराब देखते ही पागल हो जाते हैं। यह ठेकेदार भूखे-प्यासे मजदूरों को शराब की बोतल देकर उनसे काम करवाता है, उनका शोषण करता है। इस शोषण का जीवंत चित्रण "वे कहने लगे, 'जुर चढा है हो? पइसा फंसा पड़ा है, उसके लिए क्या करें हम? सोलिंग नहीं होगा तो मशीन में क्या पिसेगा? जगा जल्दी, एक ट्रक सोलिंग निकालेगा।'

" आय दइया! मालिक जी को मनह करवे की हिम्मत जाने कैसे तो पर गयी। आग लगे मोरी जुबान कों! दाता से मोंबाद करने लगे!ऐन फटकारा अपने- आपको।

"लाचार विवस हो गए हम। सोचते तो रहे की खांसी उखर परी तो? सॉस किसी विध नथमी तो ?पर जिज्जी,कह नहीं पाए कछू भी।

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श June 2021 Special Issue 02 SJIF Impact- 5.54

"मालिक जी हमारी बेबसी कितनी समझे, कितनी नहीं, सो नहीं कह सकते हम तुमसे। उनने अपने कारे रंग के बैग में से सफेद रंग की बोतल निकाली और हमें पकरा दी।

"जाते हुए बोले ,परबतिया कों पिबा दै जल्दी और में भी पी लै। ताकत आ जाएगी और जल्दी चले आओ। खदान में काम पड़ा है।" ६ बीमार व्यक्ति को दवा पिलाने की जगह शराब पिलाकर काम करने के लिए विवश किया जाता है।

इतना ही नहीं मजदूरों की स्त्रियों का भी ये ठेकेदार लोग शोषण करते हैं। यहां पर काम करती स्त्रियों पर अत्याचार किए जाते हैं। यह स्त्रिया ठेकेदारों का अत्याचार सहने के लिए विवश है क्योंकि इनके बाल- बच्चे भूखे- प्यासे हैं। मजदूरी करने वाली अवधा कहती है -"जिज्जी, बाल- बच्चा भूखे मरते रहे। कोई पुछउआ नहीं फिर। पूछे तो जनी मानसों को, उन्हें बुलावे रात-बिरात। अब बताओ, कैसे काटते जिंदगानी?" ७ ठेकेदार इन लोगों को इतना मजबूर करते हैं कि अपने हर बात मनवा लेते हैं इन मजदूरों पर अन्याय ,अत्याचार ,शोषण तो करते ही है साथ ही इनकी स्त्रियों को ठेकेदार अपने स्वार्थ के लिए दूसरों को बेच देते हैं। जिसकी खबर तक इन लोगों को नहीं रहती, जब खबर लगती है तो हाय मचाते रहे जाते हैं, कुछ नहीं कर पाते। आज भी हमारे समाज में यह विकृति जिंदा है।

भारतीय समाज व्यवस्था में बालविवाह की प्रथा प्राचीन काल से है दिखाई देती है। इसके पीछे अज्ञान, धार्मिक अंधविश्वास, रूढी-परंपराएं है। आज भी हम देखते हैं कि आदिवासी समाज में सदियों से बाल विवाह प्रथा प्रचलित रही है और वह उचीत भी मानी जाती है। लड़की को घर की इज्जत मानकर वह सयानी होने पर उसके गलत कदम ना उठ जाए इस डर से आदिवासी लोग बालविवाह कर देते हैं। बाल आयु में विवाह होने के कारण उस बालिका को आगे के जीवन में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है फिर भी परंपरा से चली आई यह परंपरा आज के आधुनिक भारत में भी प्रचलित दिखाई देती है। इस उपन्यास में राउतों में चलने वाले बालविवाह का वर्णन लेखिका ने इस प्रकार किया है -"सात-आठ बरस का बच्चा उसके पांव पर झुक आया। उसने प्यार से बच्चे के कंधे थपथपाये, सिर पर हाथ फेरा "दुल्हा हो तुम तो।" हाओ जिज्जी, दुल्हा है। हमारा दामाद। बलदेव ।"८ अवधा अपने सात वर्ष के बेटी किसिरी देवी की शादी तो तय करती है परंतु बारात में आए लोगों को खाना तक नहीं खिला पाती। इन आदिवासियों की स्थिति इस कदर है की घर पर आए मेहमान को खाना तक नहीं खिला पाते। यह सब बाराती मिलकर तालाब में उतरते हैं और मछली ,केकड़े -मेंकड़े ढूंढने लगते हैं, उसे पकाकर बारातियों को खिलाया जाता है, पर नियति का खेल देखो उसी खाने में से विषैले जंतु का परिणाम होकर बारात में आए लोगों की मृत्यु हो जाती है दूल्हा& दुल्हन भी मर जाते हैं। हृदय को चीर देने वाली स्थिति का अंकन लेखिका ने इस उपन्यास के माध्यम से किया है- कल वाली बारात पर्सन के पौधों की तरह बिछी पड़ी है। लोग तड़प रहे हैं। कुचले हुए केंद्रों की तरह बिलबिला रहे हैं। कुछ ऐसी मस्त-मस्त दे है जिनमें बिल बिल आने का शक भी नहीं बचा। दस्त उल्टी मोर्चा बीमारी और मौत के शिकंजे में झगड़ा कल वाला उत्सवी समूह वह। वह घबराकर धरती पर बैठकर ही दोनों हाथों में अपना सिर थाम लिया अब ले जाना होगा इन्हें निगाह दाहिने हाथ को गई तो मूर्छा आने लगी उसे ठीक सामने श्रीदेवी और बलदेव बिखरे पड़े थे मृतक उसकी आंखें पथरा ही हुई मेरे जोशी। ९ आता है आदिवासियों की आर्थिक विपन्नता के कारण विवाह जैसे शुभ अवसर पर केवल अच्छा खाना ना मिलने की वजह से दोनों परिवारों के और बारात में सम्मिलित सभी लोग मृत्यु को प्राप्त हो गए। पहाड़ी इलाकों में आज भी यही परिस्थितियां हमें देखने को मिलती है।

मैत्रेई पुष्पा जी ने 'इदन्नमम' इस उपन्यास में केवल आदिवासियों का जीवन का चित्रण ना करते हुए उनके अंदर मंदा के माध्यम से आत्मविश्वास जगाने का प्रयास किया है। सोनपुरा गांव के कृषक ,मजदूर, महिला ,बच्चों पर हो रहे अत्याचार, उनका शोषण को देखकर मंदा चिंतित है। इन विपरीत स्थितियों से मंदा अपने गांव वालों को बाहर निकालना चाहती है। और इसी कारण वह गांव वालों को क्रेशर मालिक अभिलाख के शोषण, अत्याचार के विरोध में, गरीब मजदूरों के अन्याय के विरोध में खड़ा होने, लड़ने के लिए तैयार करते हुए कहती है"जागो रे जागो!चेतो रे घेतो! छोटे -बडे ,नन्हे- मुन्ने,बुढे- पुराने,नए जवानों के अलावा, ढोर-चोंपे,परवे-पंछी ,नदी -ताल, पेड -रूख ,हवा -पानी यहा तक दसों दिशाओ को जगाना होगा बचने -बचाने को जूझना होगा।" अतः स्पष्ट है कि इन लोगों की हालत इतनी बदत्तर है कि मंदा को उनके अंदर आत्मविश्वास जगाने के लिए दसों दिशाओं को जगने का आवाहन करना पड़ता है।

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श June 2021 Special Issue 02 SJIF Impact- 5.54

मैत्रेई पुष्पा मंदा के द्वारा सोनपुरा गांव विंध्याचल के पहाड़ी के बहाने पूरे बुंदेलखंड की करुण कथा को अभिव्यक्त किया है। बुंदेलखंड के आदिवासी लोग गिट्टी के क्रेशरों के धड़धड़ाहट से कांप रहा है, उसकी धूल के कारण लोगों के जीवन जीने की शक्ति ही नहीं खेतों की उर्वरक शक्ति नष्ट होती हुई दिखाई दे रही है। पहाड़ियों के शोषित एवं पीड़ित लोग असंगठित और अशिक्षित, दुर्बल आदिवासियों को राजासाहब जैसे राजनेता, सामंत ,अभिलाख जैसे गुंडे, व्यापारी, शोषण कर रहे हैं।

संदर्भ सूची:-

1. इदन्नमम-मैत्रेयी पुष्पा,पृ.३१२
2. इदन्नमम-मैत्रेयी पुष्पा,पृ.३१०
3. इदन्नमम-मैत्रेयी पुष्पा,पृ.२३४-२३५
4. इदन्नमम-मैत्रेयी पुष्पा,पृ.३०७
5. इदन्नमम-मैत्रेयी पुष्पा,पृ.१८८
6. इदन्नमम-मैत्रेयी पुष्पा,पृ.२२९
7. इदन्नमम-मैत्रेयी पुष्पा,पृ.२३६
8. इदन्नमम-मैत्रेयी पुष्पा,पृ.२३३
9. इदन्नमम-मैत्रेयी पुष्पा,पृ.२३६